फ़िल्म ईज़ीन

अक्टूबर 2024, अंक 12

सिनेमाहौल

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण: आर वर्क

निर्देशक

cinemahaul

अनुभव सिन्हा, अलंकृता श्रीवास्तव, कान्ति शाह, केतन मेहता, गुरु दत्त, गुलज़ार, डॉ चंद्रप्रकाश द्विवेदी, मनोहर रसकपूर, मणि रत्नम, राजकुमार हिरानी, विजय आनंद, विशाल फूरिया, विशाल भारद्वाज, श्याम बेनेगल, सई परांजपे, सत्येन बोस, सागर सरहदी

अक्टूबर 2024

अंक 12

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संपादक

अजय ब्रह्मात्मज

कवर डिज़ाइन: रविराज पटेल

मेरी बात

आपके स्क्रीन पर दिख रहे इस अंक के साथ पिछले साल के नवंबर महीने से आरंभ हुई यात्रा का एक पड़ाव पूरा हुआ है। पिछले साल अपने जन्मदिन के मौके पर मैंने कुछ निर्णय लिए थे, उनमें से पहला निर्णय फिल्मों की ई-मैगज़ीन निकालने का था। अगले महीने नवंबर से इसकी शुरुआत हो गई। हमारी कोई तैयारी नहीं थी। कोई योजना नहीं थी। रूप-स्वरूप तो आज भी तय नहीं हो पाया है। कह सकता हूं कि सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन अभी संवरने की प्रक्रिया में है। आप लोग सुझाव दें। इसे किस दिशा में बढ़ाया जाए।

आम शिकायत है कि फिल्मों पर स्तरीय लेखन नहीं हो रहा है। सोशल मीडिया के प्रचलन के बाद रोजाना सैकड़ो टिप्पणियां और प्रतिक्रियाएं पढ़ने, सुनने और देखने को मिल जाती हैं। मैं इसे अच्छा परिवर्तन मानता हूं। यह विचारों और दृष्टिकोणों का लोकतंत्रीकरण है। इन टिप्पणीकारों में से ही कुछ भविष्य में नियमित होंगे। वे फिल्मों पर सिलसिलेवार विचार करेंगे।

सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के 12 अंकों में से 10 अंक विशेषांक रहे हैं। हमने इन अंकों के आवरण विषय तय किए। लेखकों से उन विषयों पर केंद्रित लेख मांगे और उन्हें एक साथ प्रस्तुत किया। मैं यकीन से कह सकता हूं कि डिजिटल का प्रचलन

बढ़ने और सहज स्वीकृति मिलने के बाद इन विशेषांकों को नए पाठक मिलेंगे। हमारे लेखकों ने अपने समय के साथ ही अतीत की फिल्मों पर भी विचार किया है। यह एक प्रकार का उम्दा और जरूरी दस्तावेजीकरण है। खुशी की बात है कि कुछ प्रकाशकों ने इनमें से कुछ अंकों को प्रिंट संस्करण लाने में रुचि दिखाई है।

अक्टूबर के 12 में अंक के साथ इस पड़ाव पर पहुंचने के बाद थोड़ा विश्राम और फिर 2025 की जनवरी से अगले पड़ाव की यात्रा आरंभ होगी। 12 अंकों की इस यात्रा में अनेक लेखक और पाठक सहयात्री बने। उनके नियमित-अनियमित योगदान से ईज़ीन का हर अंक समृद्ध हुआ है। मैं यहां प्रसंगवश नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा का उल्लेख करूंगा। उनके सहयोग, परिश्रम और प्रोत्साहन से हमने हर महीने इसे समय से प्रकाशित किया। कुछ महीनों में तो सारी सामग्री एकत्रित कर भेजने में मुझे देर हो गई। फिर भी दोनों की तत्परता काम आई। पिछले साल दो अतिथि संपादकों गीता श्री और रविराज पटेल ने दो अंको की जिम्मेदारी ली और उन्हें पूरे मनोयोग से पूरा किया। उनके प्रति विशेष आभार।

सामान्य रूप से सिनेमा और विशेष रूप से हिंदी फिल्मों पर ज्यादा से ज्यादा लिखने की जरूरत है। सोशल मीडिया और लोकप्रिय पत्र-पत्रिकाओं ने फिल्मों की जानकारी को मुख्य रूप से लुक, इवेंट और पोज में समेट दिया है। विजुअल पर अधिक जोर है, इसलिए टेक्स्ट दरकिनार हो गया है।

दीपावली का अवसर है। आप सभी का जीवन रोशनी से जगमग हो।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें।

अजय ब्रह्मात्मज

मुंबई

अक्टूबर 2024

cinemahaul@gmail.com

अनुक्रम

अनुभव सिन्हा 7

श्री कृष्ण नीरज

अलंकृता श्रीवास्तव 16

दिनेश श्रीनेत

कान्ति शाह 31

अंकित शर्मा

केतन मेहता 37

फागुन भवसार

गुरु दत्त 45

आरती ठाकुर

गुलज़ार: 'किताब' के बहाने 48

फ़रीद ख़ाँ

गुलज़ार 56

माया मिश्रा

डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी 74

अश्वनी सिंह

मनहर रसकपूर 84

फागुन भवसार

मणि रत्नम 88

अपूर्व बनर्जी

राजकुमार हिरानी 95

सबिता एकांशी

विजय आनंद 102

डॉ. प्रकाश हिन्दुस्तानी

विशाल फूरिया 110

विभा रानी

विशाल भारद्वाज 121

सौम्या बैजल

श्याम बेनेगल 129

अशोक मिश्र

सई परांजपे 137

दिनेश लखनपाल

सत्येन बोस 147

सूर्यन मौर्य

सागर सरहदी 157

इक़बाल रिज़वी

अनुभव सिन्हा

श्री कृष्ण नीरज

इलाहाबाद में जन्मे अनुभव सिन्हा का हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में दो दशक से ज्यादा का सफर बतौर लेखक-निर्देशक रहा है। इन दो दशकों में अनुभव सिन्हा न केवल बॉक्स ऑफिस पर उतार-चढ़ाव देखे हैं बल्कि फिल्म के शिल्प और विषय-वस्तु पर भी भरसक प्रयोग किए हैं। निर्देशन की दुनिया में फिल्म 'तुम बिन' (2001) से इनका सफर शुरू हुआ और 'आपको पहले भी कहीं देखा है' (2003), 'दस' (2005), 'तथास्तु' (2006), 'कैश' (2007), 'रावण' (2011), 'तुम बिन 2' (2016), 'मुल्क' (2018), 'आर्टिकल 15' (2019), 'थप्पड़' (2020), 'भीड़' (2023) और हाल ही में नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई वेब सीरीज 'आईसी 814 द कंधार हाईजैक' समेत लगभग दर्जन भर फिल्मों का निर्देशन और लेखन कर चुके हैं। लव-रोमांस से निर्देशन की दुनिया में कदम रखने वाले अनुभव सिन्हा एक्शन ड्रामा स्टंट से गुजरते हुए न ही वीएफएक्स का इस्तेमाल किए बल्कि समय को पकड़ने में भी कामयाब रहे हैं। अनुभव सिन्हा सामाजिक विकृतियों को सिनेमाई परदे पर दिखाते हैं। आजादी के 70 साल बाद भी हमारे देश में सामाजिक बुराई नाली में कीड़े की तरह बजबजा रही है,

कानून की किताब इस बुराई को खत्म करने में अभी तक असफल रही है। अनुभव सिन्हा अपनी फिल्मों के माध्यम से इन्हीं सामाजिक बुराइयों की पड़ताल करते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं "हिन्दू समाज में नीची से नीची समझे जाने वाली जाति भी अपने से नीची एक और जाति ढूँढ लेती है" इसी के इर्द-गिर्द फिल्माई गई 'आर्टिकल 15' में अनुभव सिन्हा भारतीय जाति व्यवस्था की पड़ताल करते हैं। आजादी के 70 साल बाद भी देश के अधिकतर हिस्सों में जातीय क्रूरता अपने चरम पर है, समता का अधिकार मिलने के बाद भी यहां बराबरी जैसा कुछ भी नहीं है। गांवों में, शहरों में, दफ्तरों में, शिक्षण संस्थानों में, सड़कों पर हर जगह कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को जाति के स्तर पर नीचा दिखाता मिल जाता है। आरक्षण मिलने के बाद भी आज यूनिवर्सिटियों एवं अन्य सरकारी नौकरियों में दलितों और पिछड़ों की संख्या बहुत कम है। मनुस्मृति के पक्षधर आज भी लोग मिल जाते हैं। पढ़े-लिखे लोगों में जातिवादी मानसिकता मिल जाती है और जब यह पावर पर होते हैं तो अपनी जाति के लोगों का भला करते हैं और सामने वाले को औकात दिखाते हैं, 'आर्टिकल 15' इसी औकात की कहानी दिखाती है। अनुराग सिंहा सीधे-सीधे दलित विमर्श से जुड़ते दिखाई देते हैं और उनके पक्षधर भी। वे सिर्फ समस्या नहीं दिखाते बल्कि इस फिल्म के जरिए लोगों में समता के अधिकार के संदेश भी देते हैं, दीवारों पर पोस्टर भी लगवाते हैं। किस तरह दलितों को वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किया जाता है उन पर